Fehmi
B.A. III
B.6.20
Monday
8.00

Name
Team

M.A.
94310

B.A. III
Paper VI
M.A. JOHN

जाति प्रथा के कार्य

समाज में पाई जाने वाली विभिन्न संस्थाओं के कुछ न कुछ कार्य होते हैं। जिनका प्रभाव समाज के सदस्यों पर पड़ता है। जाति व्यवस्था भी समाज में व्यक्ति की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति का कार्य करती है। जाति प्रथा ने भारतीय समाज को स्थिरता प्रदान की है। जाति प्रथा के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों की चर्चा इस प्रकार की जा सकती है

1. रक्त शुद्धता : व्यक्ति को अपनी जाति में विवाह करना होता है। इस प्रकार एक जाति दूसरी जातियों के दोष से बची रहती है

2. मानसिक चिन्ता से रक्षा - जाति व्यक्ति के लिये यह निश्चित करती है कि उसे क्या करना चाहिये और क्या नहीं। इस प्रकार एक व्यक्ति को नये सिरे से कुछ सोचना विचारना नहीं पड़ता है और वह कि बड़ी मानसिक चिन्ता से बच जाता है

3. सामूहिक सुरक्षा का दायित्व - जाति व्यवस्था का संगठन किसी व्यक्ति पर संकट आने पर उसको सामाजिक-आर्थिक रूप से सहायता करता है। वृद्धावस्था में उसका ध्यान रखता है। नव युवकों के विवाह

Scanned with CamScanner

आदि का प्रबन्ध भी करता है।

4. सहयोग की भावना - यदि जाति व्यवस्था में संकीर्णता है वहीं उसमें विभाजता भी है, किसी गाँव के जातियाँ केवल अपना ही काम नहीं करतीं बल्कि वह अन्य जातियों के कार्यों में भी सहयोग करती हैं।

5. धार्मिक कार्य - प्रत्येक जाति का अपना देवता होता है। उनका अपना धर्म है। वह उसी के अनुसार अपना समस्त कार्य करते हैं। इनके अपने जातिय धार्मिक संगठन हैं। वह उसी के अनुसार कार्य करते हैं।

6. व्यापारिक संघ का कार्य - प्रत्येक जाति के व्यक्ति अपने व्यवसाय की रक्षा करते हैं। समान प्रकार के कार्य करने वाले व्यक्तियों में एकता होती है जो एक संघ की तरह कार्य करते हैं। वह अपने व्यवसाय की रक्षा करते हैं।

7. प्रौद्योगिकीय ज्ञान को गुप्त रखना - कुछ विशिष्ट जातियाँ कुछ विशेष कार्य में दक्ष होती है। इनके अपने औजार और यन्त्र होते हैं। इनके कार्य करने का ढंग और कला इन्हीं तक सीमित रहती है।

8. श्रम विभाजन द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ति - विभिन्न जातियों के कार्य इस तरह विभाजित किये गये हैं कि जिस से सभी

आवश्यकताओं की व्यक्तियों के लिये पूर्ति हो सके। जैसे चमार, बढ़ई, धोबी आदि सभी अपना अपना कार्य करते हैं।

9. शिक्षा सम्बंधी कार्य — विभिन्न जातियों के व्यक्ति अपने ही परिवार के व्यक्तियों को परम्परात्मक कार्य करने की कला की शिक्षा देते हैं, अन्य जातियों को नहीं। यह परम्परात्मक शिक्षा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती जाती है।

10. सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिरता — जातिप्रथा के कठोर नियमों ने एक तरफ समाज में स्थिरता प्रदान की तो दूसरी तरफ स्वदेशीय राजनैतिक तत्वों को भी स्थायित्व प्रदान किया। जातिगत मान्यताओं और विश्वासों ने हिन्दुओं को मुसलमान अथवा ईसाई बनने से रोक सकी सभी जातियाँ अपने पूर्व निर्धारित कार्यों को करती रहीं। इससे सामाजिक और राजनैतिक स्थिरता बनी रही।

11. राजनैतिक कार्य — जाति विशेष से सम्बन्धित पंचायत राजनैतिक कार्य को पूर्ण करती है। पंचायत विभिन्न जातियों में सामाजिक राजनैतिक चेतना को भी जन्म देती है। यह उनके परस्पर लड़ाई झगड़ों का भी निपटारा करती है। स्वतन्त्रता के पश्चात हरिजन और पिछड़ी हुई

जातियों के प्रतिनिधि विधान सभा और संसद में अपनी जाति का प्रतिनिधित्व भी करते हैं।

12. सामाजिक नियन्त्रण — जाति व्यवस्था सामाजिक नियन्त्रण का एक सशक्त साधन है। एक जाति के व्यक्ति अपनी जाति के नियम, मूल्य, मान्यताओं, रीति रिवाजों और परम्पराओं के अनुसार कार्य करते हैं और जो भी व्यक्ति अपनी जाति के नियमों का उल्लंघन करता है पंचायत उसे दण्ड देती है इस से सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था सदृढ़ और अनुशासित रूप से कार्य करती रहती है।

13. संस्कृति की सुरक्षा — भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का श्रेय बहुत कुछ जाति व्यवस्था को है। ~~जाति व्यवस्था~~ प्रत्येक जाति का व्यक्ति अपनी परम्पराओं, रीति रिवाजों, लोक विश्वासों का पालन करता है और उसी के अनुसार अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यों को करता है इस दृष्टि से जाति प्रथा ने भारतीय संस्कृति के सुरक्षित रखने का कार्य किया है।

14 - सामुदायिक कार्य — जातियों के अनेक कार्य सामूहिक भावना से जुड़े होते हैं। यह कार्य सामूहिक भावना को ध्यान में रख कर किये जाते हैं। जैसे सभी ग्रामीण व्यक्ति गाँव की पूजा में भाग लेते हैं मेले और बाजार के प्रबन्ध में सहयोग देते हैं। ——→——